जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा ।।
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन ।।
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ।।
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा। तेहि समेत नृप दल मद गंजा ।।
खर दूषन अरू त्रिसिरा बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली ।।

दो०-जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि।। **21** ।।

जानउँ मैं तुम्हारी प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई ।।
समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ।।
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ।।
सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी ।।
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ।।
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ।।
बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन ।।
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी। भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ।।
जाकें डर अति काल डेराईं। जो सुर असुर चराचर खाई ।।
तासों बयरू कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै ।।

दो०-प्रनतपाल रघुनायक करूना सिंधु खरारि।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि।। **22** ।।

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राज तुम्ह करहू ।।
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ।।
राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ।।
बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी ।।
राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई ।।
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं ।।
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ।।
संकर सहस बिष्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही ।।

दो०-मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान।। **23** ।।

जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति बिबेक बिरति नय सानी ।।
बोला बिहसि महा अभिमानी। मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ।।
मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही ।।